

---

Shri Jangidevacharyapranitam Virodhishatkam

श्रीजङ्गिदेवाचार्यप्रणीतं विरोधिषट्कं

Document Information

---

Text title : Shri Jangidevacharyapranitam Virodhishatkam

File name : virodhiShaTkaMjangidevAchArya.itx

Category : raama, rAmAnanda, ShaTkam, advice, upadesha

Location : doc\_raama

Author : jaNgidevAchArya

Transliterated by : Mrityunjay Pandey

Proofread by : Mrityunjay Pandey

Description/comments : From Chatuh Sampradaya Dig-Darshanm

Latest update : December 3, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 3, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीजङ्गिदेवाचार्यप्रणीतं विरोधिषट्कं



नतत्त्वा गुरुं च रामं च भाष्यकृतपुण्यसद्गजम् ।  
त्याज्यं विरोधिषट्कं हि त्यागाय बोधयाम्यहम् ॥ १ ॥

फलेहा पुरुषकारोपेक्षणं चातिसंशयः ।  
अहन्ता ममता चैतद् रामाश्रयविरोधकम् ॥ २ ॥

तदधीनतया रामभिन्नेषु चामरेषु हि ।  
श्रोत्रस्य दानं श्रवणविरोधित्वेन सम्मतम् ॥ ३ ॥

श्रीरामाधीनतां त्यक्त्वा स्वातन्त्र्येण प्रवर्त्तनम् ।  
स्वरूपस्य विरोधीति सम्मतं हि विचक्षणैः ॥ ४ ॥

विषयानुभवेच्छेशानुभवस्य विरोधिनी ।  
रामप्राप्तेर्विरोधी हि केवलैः सह सङ्गमः ॥ ५ ॥

ब्रह्मरुद्रादिदेवेषु परेशत्वभ्रमस्तथा ।  
परत्वस्य विरोधी हि सम्मतस्तत्त्ववेदिभिः ॥ ६ ॥

विरोधिषट्कमेतद्धि जन्निदेवेन बोधितम् ।  
परित्याज्यं प्रयत्नेन रामभक्तैर्मुमुक्षुभिः ॥ ७ ॥

इति श्रीजङ्गिदेवाचार्यप्रणीतं विरोधिषट्कं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Mrityunjay Pandey

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

